रसिक दोउ निरतत रंग भरे।
रास कुंज में रास मंडल रचि, जनक लली रघु लाल हरे।।
अमित रूप धरि करि कछु चेटक, जुग जुग तिय मधि श्याम अरे।।

❋ नवमोऽध्यायः ❋

❋ बिबाहोत्तर देवकन्या रास प्रकरणम् ❋

छन्द रोला—

पुनि बोले श्री सूत सुनहु शौनक मुनीश वर।
आगे कीनो चरित यथा रसिकेश सु मनहर ॥ १ ॥
प्रजानाथ श्री चक्रवर्ति अवधेश सुवन पिय।
प्रिया प्रीति पहिचानि प्रेम पालक उदार हिय ॥ २ ॥
देव सुतनि से कहा करहु अनुपम रसरासा।
विपुल विनोद बिलाश सहित हिय भरित हुलासा ॥ ३ ॥
सब बिधि करि सन्तुष्ट प्रिया को अति सुख दीजै।
एसो रास बिलाश हास रस सुन्दर कीजै ॥ ४ ॥
सुनि पिय आयसु मुदित उठीं सब देव कुमारी।
नूपुरादि वर वाद्य सकल निज साज सँवारी ॥ ५ ॥
लखि नितको रस पगीं मैथिली छवि गुण खानी।
परम कृपामयि मूर्ति मोद मन्दिर मृदु बानी ॥ ६ ॥
बोलीं पिय सों वयन चयन प्रद सरस मधुर तर।
हे रसिकेश सुजान श्याम सुन्दर सनेह घर ॥ ७ ॥
हे प्रीतम मैं श्रवण सुनेउँ ये सब सुर वाला।
सन्तानक बन मध्य प्रथम बनि लता रसाला ॥ ८ ॥
रहीं सु कुंजन माहिं मिलीं पुनि तुमहिं रसिक वर।
तुम सब बिधि अपनाय दियो सुख स्वाद मधुर तर ॥ ९ ॥

मेरी यह अभिलाष पूर्ण कीजिय रघुनन्दन ।
इन सबको सुठि लता रूप देखौं जगवन्दन ॥१०॥
सुनि प्यारी के बचन रचन पिय भाव समाने ।
चक्रवर्ति आतमज हृदत में अति सुख माने ॥११॥
सुर बालन तन चितय मन्द हँसि राजकुँवर वर ।
बोले बचन सनेह हिय अति उमंग भर ॥१२॥
हे शुभ रूपा सकल देव कन्यामम प्यारी ।
प्राण प्रिया रुचि रखन बनहु वर बेलि सुखारी ॥१३॥
सुनि पिय की रस सनी मधुर बानी वर बाला ।
सकल सत्य संकल्प सिद्ध बनि लता रसाला ॥१४॥
कोइ सुन्दर सुर विटप बनी कोइ लता ललित बनि ।
लपटीं बृक्षन माहिं महाँ मुद भरि सनेह सनि ॥१५॥
क्योंकि सकल सुर बृन्द सत्य संकल्प अमाया ।
इच्छा मय धरि देह भ्रमत कोइ भेद न पाया ॥१६॥
जसी इच्छा करैं तुरत सोइ रूप बनावैं ।
खग मृग पशु नर विटप फूल फल बनि दर्शावैं ॥१७॥
नृत्यगान को साज बिबिधि वर वाद्य रूप धरि ।
अद्भुत रचना रचहिं निमिष में हिय उमंग भरि ॥१८॥
सकल सत्य संकल्प करत इच्छा पलमाहीं ।
प्रगटत सब जग वस्तु देर लागै कछु नाहीं ॥१९॥
याते सब सुर सुता बनी वर वेलि सुहावन ।
चमत्कार लखि बिपुल पिया हिय मोद बढ़ावन ॥२०॥

भइं प्रसन्न मैथिली मुदित बोलीं हर्षाई ।
अब द्रुत सब सुर सुता नारि तन लेहु बनाई ॥२१॥
सुनि स्वामिनि के बचन सकल तजि लता स्वरूपा ।
प्रगटीं परम प्रकाश मई सुर सुता अनूपा ॥२२॥
इमि अद्भुत संकल्प सिद्धि रति पिय पद माहीं ।
सेवा की रुचि निरखि मैथिली मृदु मुसुकाहीं ॥२३॥
अतिसय विस्मित हृदय मुदित मन राजकिशोरी ।
बोलहिं बचन सनेह सनी सुखमय रस बोरी ॥२४॥
हे जीवन धन रमण योग बल सकल तिहारे ।
भइ सब को संकल्प सिद्धि विश्वास हमारे ॥२५॥
कहि अस बचन रसाल ललकि लगि पिय हिय माहीं ।
गाढ़ालिंगन कीन परम आनन्द समाहीं ॥२६॥
तब हिय अति हर्षाय प्राण जीवन धन प्यारे ।
पगे प्रिया की प्रीति प्रेम लम्पट सुकुमारे ॥२७॥
करत विविधि बिधि प्यार परम आनन्द समाये ।
श्री रघुराज किशोर निरखि छबि जाल लुभाये ॥२८॥
दिव्य सिंहासन मध्य युगल दम्पति अति सोहैं ।
निरखि मधुर माधुरी परस्पर दोउ मन मोहैं ॥२९॥
तब दम्पति रुचि जानि देव कन्यन सुख पाई ।
विपुल सु वाद्य बजाय रास आरम्भ कराई ॥३०॥
बिबिधि भाव अनुभाव हाव रस भेद अपारा ।
करि कटाक्ष कमनीय रास उत्सव बिस्तारा ॥३१॥

गान तान संगीत नृत्य गुण प्रगटि अनूपम् ।
सरसायो रस रास अमल अद्भुत रस रूपम् ॥३२॥
श्री मिथिलेश कुमारि रास लखि अति सुख पायो ।
स्वर्ग अवनि के मध्य लोक सबमें रस छायो ॥३३॥
परमानन्द विभोर सकल नर नारि मगन मन ।
जग व्यवहार बिसार रास रस चखत शान्त बन ॥३४॥
लखि सो रास रसाल मुर्छि महि गिरेउ काम रति ।
अपर कवन जग माहिं रहे जो सावधान मति ॥३५॥
कहत सूत मुनिराज सुनहु शौनक मुनि बृन्दा ।
जहँ बिलसत रसिकेश राम रघुवर सुख कन्दा ॥३६॥
अखिल वेद वेदान्त सार सर्वज्ञ उदारा ।
परम स्वतन्त्र समर्थ नेह निधि सुख रस सारा ॥३७॥
जगताधार परेश परम गति सब जग कारण ।
प्रगटे कृपा निधान अखिल भू भार उतारण ॥३८॥
तिनहिं न कछु आश्चर्य करैं जो सो सब थोरा ।
याते तजि सन्देह भजिय नित नृपति किशोरा ॥३९॥
तब बोलीं मैथिली जगत में जे दिन सुन्दर ।
तिन सबहिं ते सरस सुखद लागत बसन्त वर ॥४०॥
पुनि बसन्त ऋतु माहिं अन्य रमणी जग केरी ।
तिन सबहीं ते सुखद नवल मन हरन घनेरी ॥४१॥
श्री रघुवर की विपुल सरस रमणी गण राजत ।
जिनकी सुछबि विलोक उमा रति रमा लजावत ॥४२॥

जेते रसिक प्रवीण नवल नायक जग माहीं ।
तिन सब के शिरताज मुकुट मणि राम कहाहीं ॥४३॥
अपर सुनायक रसिक सकल मणि सदृश कहावत ।
तिन के बिच श्रीराम सु कौस्तुभ मणि इमि भावत ॥४४॥
अपर नायकन केर परम रमणी वर वामा ।
तिन सब से सौन्दर्य शील गुण निधि सुख धामा ॥४५॥
रघुवर रमणी बिपुल बिमल विधु बदन लजावन ।
कामिनि केलि कलोल कला कुशला मन भावन ॥४६॥
हे सुख भोक्तन मध्य श्रेष्ठ तम श्रेष्ठ महाना ।
हे सुन्दर हे महाभाग हे रसिक सुजाना ॥४७॥
हे छबि निधि हे महाविभूते हे जग वन्दन ।
महानुभाव उदार प्रेम पालक रघुनन्दन ॥४८॥
हे जीवन धन लाल रमण हे प्राण नाथ वर ।
हे पिय "सीताशरण" सौम्य मूरति सुशील तर ॥४९॥
मैं इन ललनन मध्य पाय यह ऋतु बसन्त वर ।
लोकोत्तर सुख स्वाद सतत अनुभवौं मधुर तर ॥५०॥
निशिदिन पलक समान लगत लखि सुखद रास रस ।
यह तव कृपा प्रसाद अहै सब हे उदार यश ॥५१॥

चन्द्रा जी पूजिता प्रेममयि जनककिशोरी ।
चन्द्रकला सेविता शीलनिधि रति रस बोरी ॥५२॥
चन्द्रावति कृत ललित नवल नख शिख शृंगारा ।
सुठि कल्याण स्वरूप रसिक जीवन आधारा ॥५३॥

महा भाग्य शालिनिन ध्यायिता शिव अज वन्दित ।
उमा रमा गुण भनित स्वजन मन करनि अनन्दित ॥५४॥
बड़े परम ऐश्वर्य वान जग में जन जेते ।
वन्दत चरण सरोज नेह युत निशिदिन तेते ॥५५॥
ऐसी श्रीअवनिजा कृपामयि रूप उजोरी ।
श्री निमि वंशोद्भवा प्रेम पूरित रस बोरी ॥५६॥
बोलीं पिय सों बैन परम आनन्द समाई ।
"सीताशरण" बिलोकि वदन बिधु हिय लपटाई ॥५७॥
देवकुमारिन केर रास मधि मगन प्राण धन ।
परिकर निकर समेत रसिक चूड़ामणि शुचि मन ॥५८॥
लखि सो रास अनूप चन्द्र तन सुरति बिसारी ।
चहत गगन से गिरन रुकेउ सब राशि मझारी ॥५९॥
मेष मीन वृष आदि राशि सब परम सुखद वर ।
तिन सबहीं में रुकेउ चन्द्र उज्वल प्रकाश कर । ६०॥
महा रास की एक मूर्ति श्रीरामचन्द्र वर ।
तासु रास रस सुधा स्वाद लहि चन्द्र मुदित उर ॥६१॥
निज गति सकल बिसारि मगन मन सुधि कछु नाहीं ।
पायेउ परमानन्द स्वाद अनुपम् हिय माहीं ॥६२॥
कई मास सम सुखद भई निशि पिय रुचि जानी ।
बीतीं जेहि में राशि सकल हिय में सुख मानी ॥६३॥
यदपि भई तिथि सकल तदपि सर्वदा प्रकाशा ।
रह्यो पूर्णिमा सदृश सबनि हिय कमल विकाशा ॥६४॥

अखिल विश्व के नाथ सर्व प्रेरक सब लायक।
जग कारण रसिकेश प्राण वल्लभ रघुनायक ॥६५॥
कर्त्ता कार्य्य सु क्रिया आदि सब के संचारक।
पुनि सँग में मैथिली शक्ति निधि जगत सुधारक ॥६६॥
तिन को रास रसाल व्यतिक्रम भो तेहि कारन।
तासों कछु आश्चर्य करिय नाहिंन जिय धारन ॥६७॥
पुनि सुर बालन हृदय जगी उत्कण्ठा अति प्रिय।
हम दोउन के मध्य विराजैं सुठि प्यारी प्रिय ॥६८॥
अस निज मन में सोचि सकल बोलीं सुख पाई।
हे तरुणी गण सुखद शील निधि निमिकुल जाई ॥६९॥
हे मैथिली उदार रसिक जीवन रघुनन्दन।
तिनकी प्राण अधार करत तुम को जग वन्दन ॥७०॥
हे मम जीवन प्राण कृपामयि राज किशोरी।
हे प्रीतम रस रँगी रहत बनि चन्द्र चकोरी ॥७१॥
गोप सुतनि के मध्य कृपा करि यथा युगल वर।
विलसे भरे सनेह परस्पर भरि उमंग उर ॥७२॥
तथा बहुरि करि कृपा पधारिय प्रीतम प्यारी।
राजिय मण्डल मध्य यही वर विनय हमारी ॥७३॥
तुम विचित्र वर बुद्धिमती जस उचित बिचारिय।
तस कीजिय व्यवहार विनय मेरी उर धारिय ॥७४॥
सुनि तिन की वर विनय रसिक चूड़ामणि रघुवर।
नटवर नवल किशोर परम मन हरन रम्य तर ॥७५॥

नित नव-नव आनन्द विविधि वर भोग सु भुक्ता ।
निन्दक बहु गन्धर्व रूप रस निधि संयुक्ता ॥७६॥
मुदित परम रस रास स्वाद हित स्वयं पधारे ।
रासस्थली मझार रँग भरि अति सुकुमारे ॥७७॥
संग रंग रस रूप मैथिली गल भुज दीने ।
निरखत पियबिधु वदन स्ववश मन बुधि चित कीने ॥७८॥
पुनि पिय परम प्रवीण प्रेम पूरित प्रिय नागर ।
प्रिया प्रीति रस पगे प्रेम पालक रस सागर ॥७९॥
करि आग्रह बहु बार भाँति बहु सपथ दिवाई ।
सिंहासन आसीन प्रिया को दीन कराई ॥८०॥
पुनि बोले वर बचन रचन अनवद्य मधुर तर ।
हे प्राणाधिक प्रिये भरी रस रंग सुमन हर ॥८१॥
तव यह सहज स्वभाव सतत सब कार्य हमारे ।
करतीं प्रेम समेत पाय मन मोद अपारे ॥८२॥
याते जो प्रिय मोहिं वही कृत कीजिय प्यारी ।
सोइ तव सुठि कर्त्तव्य जानि जिय प्राण अधारी ॥८३॥
पुनि सुर वालन मध्य रंग रँगि रास बिहारी ।
सज्जन सुखद सुजान रास लम्पट मनहारी ॥८४॥
लीला लोभित लाल ललित अति आत्मनाथ प्रिय ।
स्वजन सनेही सतत प्रेम पहिचानि जानि जिय ॥८५॥
सब रुचि राखन हार मार मद मर्दन रघुवर ।
सिय सन्मुख करि नृत्य भरे उत्साह उमगि उर ॥८६॥

यह इनहीं की बस्तु हृदय अस करत बिचारा।
करैं निवेदन इनहिं यही कर्त्तव्य हमारा ॥८७॥
करि इमि बिबिधि बिचार प्यार पागे रघुनन्दन।
नृत्य गान संगीत बिपुल बिधि करि जग वन्दन ॥८८॥
बहु क्रीड़ा कमनीय कला कुशलता दिखाई।
जीवन धन चितचोर परम रस निधि रघुराई ॥८९॥
सब बिधि प्रियै रिझाय गाय सुख पाय सखिन सँग।
रमि रमाय सुख लेत देत रँगि परम प्रेम रँग ॥९०॥
दै सब को बहु स्वाद प्रिया सँग दै गलबाहीं।
सिंहासन के मध्य लसत प्रीतम हर्षाहीं ॥९१॥
चक्राकार अलात चहूँदिशि देव कुमारी।
नृत्यत भरि अनुराग हृदय पावत सुख भारी ॥९२॥
मधुर मनोहर अंग रंग रस पगे रसिक वर।
शोभित स्वामिनि संग धरे भुज अंश मोद भर ॥९३॥
यथा यामिनी माहिं लसत ध्रुव गगन मझारी।
बाढ़त तब शिशु मार चक्र की छबि अति भारी ।९४॥
पुनि सुर सुता अनूप निधि अतुल अकथ अति।
चहुँदिशि विकसित दिव्य कमल जिमिकहत बिमलमति ॥९५॥
सोइ सब पल्लव सदृश देव कन्या समुदाई।
शोभित मण्डल रास मध्य कर्णिका सुहाई ॥९६॥
तामधि प्रेम प्रमोद पगे पीताम्बर धारी।
लसत लड़ैती संग लाल लम्पट रस कारी ॥९७॥

केशर रेणु सदृश्य पीत अम्बर पिय तन में।
पहिरे नटवर नवल अमल उछाह भरि मन में ॥९८॥
पुनि रासस्थल मध्य देव कन्यन सँग रघुवर।
लसत यथा सोउ सुनहु कहौं हिय अति उमंग भर ॥९९॥
जिमि कमला उरमाहिं पदिक मणि पद्मराग रचि।
राजत "सीताशरण" अकथ अद्भुत अनूप शुचि ॥१००॥

दो०—पद्मराग मणि अमित रचि, रुचिर पदिक बिच माहिं।
इन्द्रनील मणि अति सुभग, अति सुषमा दर्शाहिं ॥ १ ॥

पद्मराग मणि सदृश देव कन्या समुदाई।
राम पदिक वरहार सरस सुन्दर सुखपाई ॥ १ ॥
इन्द्रनील मणि सदृश श्याम सुन्दर श्रीरघुवर।
नृत्य कला कमनीय सु चंचलता अति सुखकर ॥ २ ॥
देव सुता भरि भाव नृत्य स्थिर गति करहीं।
परमानन्द प्रमोद प्रेम अपने उर धरहीं ॥ ३ ॥
वीण मृदंग सितार आदि वर वाद्य सुहावन।
गान तान संगीत शब्द नूपुर मन भावन ॥ ४ ॥
तीनों मिलि इक भये महा सुख सिन्धु बढ़ायो।
भू अकाश चहुँ ओर सरस रस रास सुहायो ॥ ५ ॥
नारद शिव शारदा सिद्ध किन्नर गन्धर्वा।
अपर अनेकन अमर व्योम मधि नृत्यत सर्वा ॥ ६ ॥
अंगराग पिय केर सुगन्धित सरस मधुर तर।
ले कर श्रीमद् पवनदेव सर्वत्र मोद भर ॥ ७॥

दश दिशि भू अरु गगन मध्य दीनी फैलाई।
भ्रमर झुण्ड करि पान मत्त मन अति इठलाई॥ ८ ॥
उड़त भरे उन्माद व्योम में निरखि विमाना।
राजहिं जिन में बिवुध बृन्द सब भाँति सुजाना॥ ९ ॥
तिन को चहुँदिशि घेरि भ्रमर मड़रावन लागे।
लै विमान घबराय देव गण तहँ से भागे॥१०॥
युगल रहस्य विनोद केर सुर नहिं अधिकारी।
अतिसय विषयाशक्त रहत निशि दिन सुर झारी॥११॥
जिनको मन बुधि चित्त बिषय की गन्ध भुलाई।
सुमिरत सिय रघुवीर चरण पंकज हर्षाई॥१२॥
तन के सब सुख स्वाद त्यागि पद पंकज ध्यावत।
सोइ जन "सीताशरण" मधुर लीला रस पावत।१३॥
मधुर रहस्य विनोद अपर अनुभवे न कोई।
सुर किन्नर नर नाग सिद्ध साधक किन होई॥१४॥
बोलीं श्री मैथिली मोद भरि पिय सों बानी।
हे जीवन धन लाल रसिक वल्लभ रस खानी॥१५॥
अस मैं श्रवणन सुनेउँ अवनि पर देव कुमारी।
पग न करत स्पर्श विदित सब जगत मझारी॥१६॥
सुनि सिय की सुठि सरस सुखद शुचि गिरा मधुर तर।
सुर कन्या समुदाय व्योम मधि नटत मोद भर॥१७॥
अन्तरिक्ष में लसत ललित सुर सुता समाजा।
भू न करहिं स्पर्श हँसत लखि सिय रघुराजा॥१८॥

परम सत्य शुचि अमल सतत सिय के वर बयना।
सुनि जिनको बश रहत रसिकमणि राजिव नयना ॥१९॥
श्री रघुवीर प्रभाव जगत को सिरजन हारो।
प्रगटेउ कमल अनूप मंजु मन मोहन हारो ॥२०॥
तेहि पर सब सुर सुता मुदित मन नृत्यन लागीं।
कामिनि काम कलोल कला कुशला रस पागीं ॥२१॥
तिन सब हिन के मध्य मार मद मर्दन मन हर।
लसत दिये भुज अंश सबनि के रास रसिक वर ॥२२॥
तेहि क्षण मानहुँ व्योम लगत सुठि सरस सरोवर।
निमिष रहित सुर सुतनि नयन वर कमल मोद कर ॥२३॥
भृकुटि कुटिल कमनीय केश संयुत मन भावन।
रास रंग रस भरित चपल अतिसय छबि छावन ॥२४॥
नवल अमल विधु बदन सुसेवित भली प्रकारा।
परम स्वाद सुख सनो लखत नित नृपति कुमारा ॥२५॥
पुनि सब रस की खानि अखिल जग आनन्द दानी।
श्री मिथिलाधिप लली परम प्रेमामृत सानी ॥२६॥
बोलीं अति प्रिय बयन सुनहु हे सब सुर बाला।
धन्य-धन्य तुम सकल प्रेम पूरित छबि जाला ॥२७॥
मम प्रीतमहिं प्रसन्न करन हित प्रवृति तुम्हारी।
त्यागि दिव्य सुर लोक मुदित भू लोक सिधारी ॥२८॥
सुनि मैं तव संगीत रूप पीयूष मधुर तर।
पायो परमानन्द भयो मन मगन मोद भर ॥२९॥

दिव्य सुधा संगीत पान कर अवयव सारे।
परम पुष्ट बनि गये लहे सुख स्वाद अपारे ॥३०॥
यद्यपि मम प्राणेश अमल कल कीर्ति सु छबि धर।
नायक नवल किशोर रसिक शिरमौर गुणाकर ॥३१॥
तदपि पाय तुम सबनि भाग्य तर पुरुषन माहीं।
प्रीतम सब से अधिक अपर इन सम कोउ नाहीं ॥३२॥
क्यों कि नवल अस पुरुष त्यागि सुर पुर जेहि काहीं।
स्वेच्छा पूर्वक रमण करन सुर कन्या जाहीं ॥३३॥
तजि सुरपुर के दिव्य भोग सुख स्वाद महाना।
आवहिं सेवन करन कवन जग रसिक सुजाना ॥३४॥
और आज मैं प्राप्त कीन दुर्लभ महत्त्व वर।
भइ तुम सब की सखी महा अचरज प्रमोद कर ॥३५॥
तुम सब केर सखित्त्व महा दुर्लभ जग माहीं।
सो मो कहँ भो सुलभ अपर जग में कोउ नाहीं ॥३६॥
कहौ कवन तजि मोहिं जगत में मानव कन्या।
देव सुता जेहि केर होहिं सखि को अस धन्या ॥३७॥
साक्षात सुर सुतनि संग रस रंग स्वाद वर।
पावै परम प्रमोद प्रेम उत्साह हृदय भर ॥३८॥
जब येहि विधि वर बयन मधुर रस भरित सुधा सम।
बोलीं श्री मैथिली मंजु तर परम अनूपम ॥३९॥
सुनि सब देव कुमारि राम रमणी छबि धामा।
बोलीं हिय उमगाय मधुर प्रिय बचन ललामा ॥४०॥

हे करुणा गुण खानि कृपा मयि राज किशोरी ।
प्रीतम प्राण समान परम प्रिय रूप उजोरी ॥४१॥
तुम्हरी भृकुटिं विलाश पाय ब्रह्माण्ड अमित वर ।
प्रगटत बिनसत निमिष माहिं तव खेल मोद कर ॥४२॥
अस तव परमैश्वर्य अपर जग को अस वामा ।
जो समता तव करै आप सब बिधि छबि धामा ॥४३॥
पर यह शील स्वभाव रावरो हम सब जानत ।
गौरव सबहीं देहु प्रीति हिय की पहिचानत ॥४४॥
अयोनिजा स्वामिनी आप दासी हम सारी ।
देव कुमारी निकर कृपा नित चहत तिहारी ॥४५॥
भूरि प्रशंसत हमनि परम उत्तम बतलाई ।
यह सब तुम्हरेहि योग्य अपर से नहिं बनि आई ॥४६॥
उमा रमा शारदा आदि ईश्वरी कहावत ।
सो सब कृपा तुम्हारि सतत तुम्हरे पद ध्यावत ॥४७॥
सेवन उर अभिलाष कदा सोउ एक दिन पावैं ।
हम सब अतिसय धन्य नित्य लखि हिय हुलसावैं ॥४८॥
जग में जेतीं शक्ति सकल तव चरण ललामा ।
ध्यावत "सीताशरण" लहत मन में विश्रामा ॥४९॥
और आप ने कहा कि सुनि संगीत मधुर तर ।
मुख से तुम सब केर मोहिं अति सुखद मोद कर ॥५०॥
भै मम अवयव पुष्ट यहू वर बचन तुम्हारे ।
हमनि सु गौरव देन करन हित परम सुखारे ॥५१॥

ब्रह्मादिक सुर मुखन सुना हम प्रथमहिं श्रवणन।
श्री श्रृंगार रस प्रगट कीन मैथिली मुदित मन ॥५२॥
तव चरणाश्रित रहत सदा श्रृंगार महा रस।
यह प्रसिद्ध सर्वत्र परम उज्वल रावर यश ॥५३॥
हे मिथिलेन्द्र सु कीर्ति मैथिली मधुर मंजु तर।
हे प्रिय प्रीति प्रतीति प्रेम पूरित उदार वर ॥५४॥
स्वर्ग निबासिन जानि हमनि अति दीन बड़ाई ॥
सो बस्तुतः बिचार करिय तो यही लखाई ॥५५॥
स्वर्ग शब्द को अर्थ अमित सुख रहित द्वन्द दुख।
सोउ तव कृपा प्रसाद मिलेउ हम सबनि महा सुख ॥५६॥
तव पद पंकज केर महा सुख स्वर्ग अपारा।
पायेउ तुम्हरी कृपा कृपामयि दीन सहारा ॥५७॥
जो अति दुर्लभ सबहिं सतत कोउ पावत नाहीं।
सो सेवहिं हम सकल मोद भरि निज मन माहीं ॥५८॥
स्वर्ग निबासी देव सकल तिन को दुर्लभ अति।
सेवन तव पद कंज केर वर्णत निर्मल मति ॥५९॥
हे प्रिय श्री मैथिली आप के सब स्थाना।
दिव्य सच्चिदानन्द नित्य अति सुखद महाना ॥६०॥
अमल त्रिपाद विभूति प्रथम अरुद्वुतिय अवध पुर।
यहि ब्रह्माण्ड मझार परम विख्यात अकथ वर ॥६१॥
तृतीय श्री मिथिला धाम परम अभिराम अमल अति।
प्रकृति आवरण रहित दिव्य गुण युक्त विमल मति ॥६२॥

वर्णत जाको सतत आदि अरु अन्त रहित शुचि ।
जहँ तव परिकर निकर मुदित बिहरत अपनी रुचि ॥६३॥
याते हे मैथिली सुधा सम सुखद बिहारिनि ।
पिय की जीवन भूरि सदा सब विधि अभिरामिनि ॥६४॥
यह संगीत सुनाय तुमहिं अब हम सब काहीं ।
तजि तव चरण सरोज कदा जाना कहिं नाहीं ॥६५॥
यदि सुरलोकहि जायँ एक तहँ अति दुख भारी ।
सुर सब विषयाशक्त भरे अभिमान अपारी ॥६६॥
तव यह दिव्य बिलास रास रस स्वादन पावत ।
याते वे सब सतत स्वर्ग ही के गुण गावत ॥६७॥
उनके स्वाद विहीन बचन हम को नहिं भइहैं ।
तिन से भईं विरक्त नहीं हम सब सुनि पइहैं ॥६८॥
अतिसय सीठे बचन सुरन के लगिहैं हम को ।
याते हम क्षण मात्र त्यागि नहिं जइहैं तुम को ॥६९॥
तव पद पंकज सेइ सर्वथा स्वर्ग भुलाई ।
करिहौं विपुल बिहार संग तुम्हरे सुख पाई ॥७०॥
कहि इमि बचन विनीत सकल सुर सुतामुदित मन ।
लागीं बिबिधि बिहार करन रसिकेश पिया सन ॥७१॥
रति रस रंग उमंग भरीं सब देव कुमारी ।
बिहरत रघुवर संग केलि कल कौतुक कारी ॥७२॥
बिपुल सुभग शुचि भाव हाव इंगित करि बाला ।
रमै पिया के साथ पगीं रस रास रसाला ॥७३॥

सुर पुर में सुर सुता सबनि में परम अनूपा।
काम केलि कल कुशल सकल ये रत्न स्वरूपा ॥७४॥
श्री सिय राम सनेह बिबश करि बिपुल बिलासा।
बिहरैं प्रीतम संग रंग हिय भरीं हुलासा ॥७५॥
रास रसिक शिरताज सरस संगीत सु प्रिय कर।
मन में करैं बिचार प्रेम लम्पट उदार तर ॥७६॥
येहि बिहार के पूर्व सखिन स्तुति सिय केरी।
पगि प्यारी के प्यार कीन बहु भाँति घनेरी ॥७७॥
पुनि सो स्तुति छोड़ि लगीं बिहरन मम संगा।
करि क्रीड़ा कमनीय रँगी सब रति रस रंगा ॥७८॥
मासे करि अति क्रोध मान प्यारी कहुँ ठानै।
यद्यपि प्रिया प्रवींण सुहृद मम जिय की जानै ॥७९॥
अस शंका मन आनि प्राण वल्लभ रस सागर।
रति रस लम्पट लाल रास रसिया नव नागर ॥८०॥
भये परम भय भीत बहुरि तेहि शान्त करन हित।
सूक्ष्मलता सम प्रियै कीन आलिंगन समुदित ॥८१॥
निज सुन्दर वर भुजा युगल प्यारी गल धारी।
निरखत बदन मयंक होत पुनि पुनि वलिहारी ॥८२॥
सरस अधर वर सुधा मधुर रस चखत चतुर्वर।
निरखत निमिष निवारि नवल नायक सु प्रेम भर ॥८३॥
पावत परमानन्द सरस सुख स्वाद रसिक बर।
प्यारी अथवा अपर मर्म कोउ लखै न इिय कर ॥८४॥

अस पिय मन अनुमान प्रिया अतिसय प्रवीण तर ।
पिय हिय को लखि भाव प्राण प्यारी उदार उर ॥८५॥
हरन हेत संकोच पिया को एक प्रसंगा ।
प्यारी कहेउ उठाय पगीं पिय के रस रंगा ।८६॥
बोलीं श्री मैथिली बचन मंजुल अति मन हर ।
सब बिधि पिय हिय सुखद सरस अनुपम सनेह कर ॥८७॥
हे जीवन धन लाल रसिक चूड़ामड़ि छबिधर ।
यह प्रसिद्ध वर बात याहि जानत सब जग भर ॥८८॥
देव सुता करि सकैं गान हो अन्तर धाना ।
सोइ कीजिय हृदयेश मधुर मन हरन सुजाना ॥८९॥
सिय स्वामिनि रुचि जानि मोद भरिदेव कुमारी ।
श्री प्रीतम गुणगान करन लागीं मनहारी ॥९०॥
रचि नव छन्द अनूप रूप पिय शील सुहृदता ।
गावहिं गुण गर्विता गीत मंजुल मुद भरता ॥९१॥
पुनि जहँ तहँ सुर सुता सखिन दृग सों ने लखावैं ।
होकर अन्तर धान पिया के गुण गण गावैं ॥९२॥
शशि कपूर सदृश्य जलज अति अमल सुभग तर ।
परम चपलता युक्त नटैं तिन पर सनेह भर ॥९३॥
लखि तिन को सुठि नृत्य विमोहित भयेउ अचर चर ।
प्रीतम प्राण अधार भये मोहित विशेष तर ॥९४॥
अपर अमित नृपसुता नृत्य गुण लखि बिस्मित अति ।
पावहिं परम प्रमोद प्रेम पूरित उदार मति ॥९५॥

देव सुतनि जब लखेउ राज कन्या विस्मित मन ।
व्यौमस्थित सुर सुतनि नागमणि कमल गुच्छ सन ॥९६॥
प्रमुदित कीन प्रहार रहित शंका नृप वालन ।
याते होहिं सचेत मोद अति होहि निबारन ॥९७॥
इमि सुर कन्ययन केर कमल आदिक ताड़न लहि ।
दुखित भईं नृप सुता सकल सो नहीं सकीं सहि ॥९८॥
यद्यपि राज कुमारि देव कन्यायन सम तन में ।
नाहिन दिव्य प्रकाश अस्तु दुख मानत मन में ।९९॥
लखि नृप वालन दुखित कान्त कमनीय कलाकर ।
(सीताशरण) सुजान स्वजन मन अखिल मोद भर ॥१००॥

दोहा–भुज उठाय संकेत से, सुर कन्यन रसिकेश ।
"सीताशरण" सु भूमि पर, लीं बुलाय हृदयेश ॥२॥

तब नृप बालहु सकल फूल फल मुक्ता हारन ।
देव कुमारिन मुदित लगीं बहु विधि जब मारन ॥ १ ॥
यहि बिधि बिपुल बिहार मगन श्रम रहित सुखारी ।
नृप कन्या सुर सुता परस्पर सुमनन मारी ॥ २ ॥
यह लखि प्राण अधार रसिक चूड़ामणि रघुवर ।
शरद विमल बिधु बदन विनिन्दिक सरस सुभग तर ॥ ३ ॥
करि कटाक्ष कमनीय मन्द हँसि श्री रघुनन्दन ।
सबनि मध्य में भये मुदित स्थित जग वन्दन ॥ ४ ॥
पुनि निज भुजा उठाय सकल कन्यन समुझाई ।
प्रेम प्रणय की मार परस्पर बन्द कराई ॥ ५ ॥

गज मुक्ता मणि हार रत्न हीरा सुविपुल वर ।
टूटि गिरे महि मध्य सकल बिखरे प्रकार कर ॥ ६ ॥
मनहुँ शरद निशि माहिं गगन मधि भूषित तारे ।
तिमि भू में अति लसत रत्न मुक्ता मणि सारे ॥ ७ ॥
यदपि सुर सुतनि प्राणनाथ नहिं कीन प्रहारा ।
प्रेम युद्ध से दोउन परस्पर दीन निवारा ॥ ८ ॥
सावधान चित भईं तदपि सब देव कुमारी ।
गुनि अपनी अति हारि हृदय बिच परम दुखारी ॥ ९ ॥
सोचहिं पिय ने हमनि व्योम से अवनि उतारी ।
दीन हमहिं हरवाय जिताईं राज कुमारी ॥१०॥
हम सबहिन ते अधिक इनहिं मानत हृदयेश्वर ।
दुविधा मन में रखत प्राण वल्लभ रसिकेश्वर ॥११॥
सोइ लीला पिय संग करन लागीं सुर वाला ।
लागीं करन प्रहार सुमन मणि मुक्तनि माला ॥१२॥
इत मिथिलाधिप लली निरखि यह कौतुक भारी ।
परतिय लम्पट लाल जानि मन भईं दुखारी ॥१३॥
यदपि स्वकीयन त्यागि परकिया स्वप्न न परसत ।
प्रीतम प्राण अधार तदपि भ्रम बश यह दरसत ॥१४॥
जानै भल मैथिली पिया छल रहित नेह निधि ।
परकीया रति रमण करत नाहिन काहू बिधि ॥१५॥
नित मेरे अनुकूल रहत सब विधि सब दिन पिय ।
तदपि सुर सुतनि चरित देखि अति भ्रम प्रगटेउ हिय ॥१६॥

प्रेमावेश विशेष बुद्धि से कछु न बिचारो।
प्रेम अहेरिव गती दोष पिय केर निहारो ॥१७॥
बोलीं पियसों वैन मधुर रस भरित सुभग अति।
पर तिय गामी लाल प्रेम लम्पट उदार मति ॥१८॥
तत्पश्चात् सुजान रसिक जीवन मन भावन।
परम धीर गम्भीर प्रेम पूरक अति पावन ॥१९॥
प्रेमिन प्राण अधार सरस सुठि सरल सुभाऊ।
शुभ गुण गण भंडार शील निधि श्री रघुराऊ ॥२०॥
प्यारी कृत आक्षेप अनादर मानि रसिक वर।
सिय हिय को भ्रम दूरि करन हित परम सुछबि धर ॥२१॥
बर्धन प्रेम प्रतीति भये पिय अन्तर्धाना।
जिमि शशि होवत अस्त निरखि सबहिन दुख माना। २२॥
यथा अस्त बिधु भये निशा होवै अँधियारी।
छावै व्योम मझार मेघ की घटा अपारी ॥२३॥
तथा निकर नायिका कान्ति हत भईं मलिन मन।
भूलीं भूषण बसन विकल अतिसय शोकित तन ॥२४॥
पतिव्रता का धर्म पती सँग यावत क्रीड़ा।
कौतुक हास्य विनोद करै पति बिन अति व्रीड़ा ॥२५॥
पति बिन भूषण बसन ललित शृंगार अपारा।
अतिसय शोक समाज दुखद जग अरु परिवारा ॥२६॥
यदपि दिव्य ऐश्वर्य बिबिधि वर बस्तु अनेका।
खेल उपकरण अमित सुखद एकन ते एका ॥२७॥

तदपि प्राण के प्राण जीव के जीवन दायक।
प्रीतम रसिक नरेश स्वजन मन मोद प्रदायक।।२८।।
श्री रघुराज किशोर परमचित चोर नेह निधि।
तिन बिन जग दुखरूप विकल नहिं शान्ति काहु बिधि।।२९।।
चित अति चिन्ता चढ़ी बढ़ी शंका मन माहीं।
दच्छिण भुजा दृग जानु जंघ फरकैं अमुहाहीं।।३०।।
अतिसय असगुन भये अशुभ सूचक पशु नाना।
शृङ्गालादिक जीव वाम दिशि लगे दिखाना।।३१।।
अप्रिय पच्छि गण बिपुल जुरे चहुँदिशि ते धाई।
घेरि लईं नायिका निकर कटु शब्द सुनाई।।३२।।
ऊष्ण तीव्र अति वायु चलन लागी तेहि काला।
लखि सबको चित भ्रान्त चपलमन विकल विहाला।।३३।।
जीवन प्राण अधार बिना सब वाम सुनयनी।
मगन महा दुख सिन्धु भईं मुर्छित पिकवयनी।।३४।।
पिय की जीवन मूरि मैथिली अवनि किशोरी।
विह्वल विषम वियोग मुर्छि महि गिरीं विभोरी।।३५।।
सकल नायिका वृन्द चेतना रहित विकल मति।
भईं परम बेहोश नेह बश हृदय दुखित अति।।३६।।
समझावै को काहि सकल तन दशा भुलाई।
मुर्छि भूमि पर गिरीं पिया मूरति हिय लाई।।३७।।
लखि सो दुखित समाज महादुख हू दुख पायो।
"सीताशरण" कठोर बज्र सम हृदय बनायो।।३८।।

लखि सियकी सो दशा भयो शत खण्ड न ममहिय ।
बज्रहु से अति निठुर गनहु निश्चय मेरो जिय ॥३९॥
सो समाज अवलोकि दशा लखि लता सरित वर ।
अति बिस्तार गँभीर भरेउ जल अति अगाध तर ॥४०॥
सो सब हो सन्तप्त प्रेम वश गईं सुखाई ।
बिरहानल से दग्ध विटप ह्वै गै मुर्झाई ॥४१॥
लता ललित मन हरन प्रथम जो रहीं सुहावन ।
सो सब भईं उदास बिना प्रीतम मन भावन ॥४२॥
सखिन दशा अवलोकि हंस हंसी मृग हिरनी ।
शुक अरु शुकी सनेह बिबस व्याकुल मन धरनी ॥४३॥
सारस अरु लक्ष्मणा घेरि बैठे चहुँओरा ।
सोचसिन्धु सब मगन भये अति प्रेम विभोरा ॥४४॥
निज मन करैं बिचार सखिन रक्षक प्रिय नायक ।
जीवन प्राण अधार स्वजन मन आनँद दायक ॥४५॥
श्री अवधेश कुमार राम रघुवंश हंश सम ।
तिन बिन यह सब दुखित परीं महि भरीं शोक श्रम ॥४६॥
अस सोचत सोउ गिरै मुर्छि तन दशा भुलाई ।
कछुक काल के बाद उठे जब तन सुधि आई ॥४७॥
तब उड़ि गये अकाश सरित में पंख भिजाई ।
सखियन सिंचन कीन नेह हिय में अधिकाई ॥४८॥
सो शीतलता पाय जगीं सब रघुवर वामा ।
उठि बैठीं सकुचाय प्रेम पागीं प्रिय श्यामा ॥४९॥

पर पिय प्राण अधार बिना दश दिशा शून्य अति ।
दीख परै इन सबै भईं सब अति बिस्मित मति ॥५०॥
पुनि बिचार करि सकल चलीं खोजन बन माहीं ।
उत्कण्ठा हिय प्रबल तदपि विरहाग्नि समाहीं ॥५१॥
अस मन करहिं विचार प्राण जीवन दयालु अति ।
हम सबको अति सुखद सुहृद अतिसय उदार मति ॥५२॥
पर यहि अवसर कीन महानिर्दयता धारन ।
हम अबलन बन मध्य त्यागि गमने केहि करन ॥५३॥
चलिये सब एक साथ उनहिं खोजहिं बन माहीं ।
मिलि प्रीतम के साथ करैं क्रीड़ा हर्षाहीं ॥५४॥
करि अस सुदृढ़ बिचार प्रेम पूरित सब वामा ।
जहँ तहँ खोजन लगीं मंजु मूरति छबि धामा ॥५५॥
एक-एक बृच्छन काहिं सकल बूझै अकुलाई ।
तुम देखे कमनीय कान्त कहुँ देहु बताई ॥५६॥
मंजु मधुर मृदु मूर्ति मनहुँ गन्धर्व राज सुत ।
वय किशोर सम्पन्न शील सागर छविनिधि युत ॥५७॥
हे अशोक वर विटप शोक हर मोद प्रदायक ।
मम जीवन धन लाल प्राण वल्लभ नव नायक ॥५८॥
श्री रघुराज किशोर बिपुल वर वाम रमयिता ।
सुठि स्वभाव सम्पन्न ललित अतिरास रचयिता ॥५९॥
देखे तुमने अवसि कृपा करि मोहिं दिखाओ ।
अब जनि करहु दुराव बेगि सो पन्थ बताओ ॥६०॥

जहँ गमने रसिकेश श्याम सुन्दर मम प्यारे ।
रूप अनूप उदार शील सुषमा उजियारे ।।६१।।
जिमि अर्थी जन तुमहिं सतत सेवहिं हर्षाई ।
तिमि पिय को परमार्थि सुजन सेवहिं सुख पाई ।।६२।।
खोजत बिपिन मभ्कार गईं तुलसिका विटप तर ।
पगि पिय के अनुराग सकल बूझैं वियोग उर ।।६३।।
हे प्रिय श्री तुलसिके पिया पग की पटरानी ।
तजि पिय के पद पद्म एक छण नहिं बिलगानी ।।६४।।
तव यह कीर्ति महान लोक में सब कोइ जानत ।
जीवन प्राण अधार सतत अतिसय प्रिय मानत ।।६५।।
हे परमैकान्तिनी लखे तुम ने मेरे पिय ।
हम सब काहिं दिखाय मुदित कीजिय हमरो हिय ।।६६।।
हे कदम्ब कमनीय लखे तुम ने मम प्यारे ।
स्वाभाविक सौन्दर्य्य मूर्ति मन हर सुकुमारे ।।६७।।
छबि जल सों मन केर सकल मल धोइ शुद्ध करि ।
निज रंग लेत रँगाय कृपा करि हिय उमंग भरि ।।६८।।
अस मम जीवन नाथ हमनि तजि कहाँ सिधारे ।
दृष्टि अगोचर भये चोरि मन बुधि चित सारे ।।६९।।
उन को करि अति कृपा देहु हम सबनि मिलाई ।
हम सब अति उपकार मानिहैं परम सदाई ।।७०।।
निकर नायिका बृन्द करत बहु बार प्रणामा ।
याते तुम करि कृपा करहु पूरण मम कामा ।।७१।।

हे हरि चन्दन विटप हरन वाह्यान्तर ज्वाला ।
नील कमल सम श्याम सुँदर इव कान्ति रसाला ।७२॥
मम पिय नित अति लुब्ध रहत लहि गन्ध तुम्हारी ।
तुम देखे मम कान्त प्राण वल्लभ धनुधारी ।७३।
हम सब अति सन्तप्त नायिकन प्रमुदित कीजै ।
जीवन धन चितचोर लखा कर शुभ यश लीजै ।.७४॥
हे पीपल तरु ललित सत्य वक्ता जग माहीं ।
तुम सम नाहिन अपर कृपा करिये हम पाहीं ॥७५॥
पिय सों हमनि मिलाय चित्त की चिन्ता हरिये ।
निज प्रसाद दै सबनि हृदय में आनँद भरिये ॥७६॥
तुम्हरो यही प्रसाद पिया से हमनि मिलाओ ।
यह असत्य संसार माहिं सच्चो यश पाओ ॥७७॥
हम जनिहैं मन माहिं भयो कल्याण हमारो ।
पूजन करिहैं सकल सती जग केर तुम्हारो ॥७८॥
इमि लखि कदलि सु विटप सबनि मिलि बयन उचारे।
हे रम्भे वर नारि उरू सम रूप सँवारे ॥७९॥
अखिल नरोत्तम सुभग श्याम सुन्दर सु शील तर ।
चक्रवर्ति नृप सुवन भुवन भूषण सनेह घर ॥८०॥
लखि तुम्हरो वर रूप विमोहित हो हृदयेश्वर ।
तुम मधि स्थित भये होहिं गे अवसि रसिक वर ॥८१॥
तुम अति कोमल चित्त पिया को देहु बताई ।
ललना गण रमणीय कान्त रस निधि रघुराई ॥८२॥

सर्वस जीवन मोर प्राण वल्लभ सुषमा कर।
रसिक राज शिरताज राजनन्दन उदार तर ॥८३॥
हे द्राक्षे सब रसन सुधा माधुरि तव माहीं।
स्थित है सब भाँति सकल सज्जन बतलाहीं ॥८४॥
मधुर पक्व तव सुफल सरस आस्वादन करि के।
राजे होंगे यहाँ प्राण जीवन मुद भरि के ॥८५॥
याते तुम अति शीघ्र देहु मम पियहिं बताई।
हे दाड़िम अति सुखद लखे तुमने रघुराई ॥८६॥
हम सब के वर दन्त दीप्ति तव फलन कान्ति हर।
पिय को अतिसय सुखद हृदय में परम मोद कर ॥८७॥
अस मम प्राण अधार लखे होवें यदि तुम ने।
देवो शीघ्र बताय लह्यो अतिसय श्रम हम ने ॥८८॥
हे केतकी सु पुष्प लखे तुम ने मम प्यारे।
जीवन प्राण अधार रसिक वल्लभ मन हारे ॥८९॥
मम सु अंग के सदृश तिहारो रंग निहारी।
कीन्हों होय बिचार अवसि यह पिय धनुधारी ॥९०॥
मम प्यारी के अंग सरिस केतकी सुमन वर।
निश्चय तेहि क्षण अवसि लखे तुमने पिय छबि धर ॥९१॥
देवो शीघ्र बताय कहाँ मम प्राण जिवन धन।
उन बिन हम नागरी बिपुल विह्वल उदास मन ॥९२॥
हे चम्पक यदि लखे होहिं तुमने मम प्यारे।
तो बतलाइ शीघ्र कहाँ मम दृगन सितारे ॥९३॥

प्यारी पद पंकरुह केर मकरन्द वायु युत ।
तुम धारी निज अंग माहिं अतिसय सुख संयुत ।।६४।।
कारण यही विशेष तुमहिं अलि पुंजन त्यागा ।
कदा न आवत निकट दिखावत परम विरागा ।।६५।।
इमि तुमको अवलोकि अवसि यहि सुथल रसिक वर ।
कीनी क्रीड़ा कलित होयगी हिय प्रमोद भर ।।६६।।
निश्चय तुम ने लखे होयँ गे तव मम प्यारे ।
बेगि बताओ कहाँ गये अवनीश दुलारे ।।६७।।
पुनि हे बकुल विशाल पधारे यहाँ अवसि पिय ।
सूखे सुमन सुगन्ध सहित लखि पिय अपने जिय ।।६८।।
कीनो होय बिचार यही बकुलहि मम प्यारी ।
कियो अवसि स्पर्श याहि ते हमहिं पियारी ।।६६।।
याही से तव पुष्प परम अनुरागी रसिया ।
आये (सीताशरण) अवसि मम हिय दृग बशिया ।।१००।।

दो०-तो अवश्य तुम ने लखे, होंगे नृपति कुमार ।
"सीताशरण" दिखाय दो, दृग भरि प्राण अधार ।।३।।

तुमहिं प्रसन्न विलोकि कीन मैं हिय अनुमाना ।
अवसहिं तुम ने लखे अहैं मम जीवन प्राना ।। १ ।।
हे एलादि लवङ्ग लता हे पुंगि सुफल वर ।
तुमने देखे होहिं अगर चितचोर सु छबि धर ।। २ ।।
तो मोहिं देहु मिलाय सूक्ष्म कटि पिय मन हारे ।
चलत चलत अति श्रमित भये होंगे सुकुमारे ।। ३ ।।

एला लवँग सु लतन निकट हो खड़े पियारे ।
कीनो चर्वन पान होयगो परम सुखारे ।। ४ ।।
हे नारियल सुविटप सकल बृच्छन से भारी ।
ऊँचे परम विशाल सरस फल युत सुख कारी ।। ५ ।।
तुमने देखे होहिं अवसि मम प्राण पियारे ।
दीजे वेगि मिलाय यही अभिलाष हमारे ।।। ६ ।।
अच्छे फल दातार याहि से सबहिं अधिक प्रिय ।
हो तुम सबको सुखद परम पावन बिचारि जिय । ७ ।।
अपर मधुर अति सरस फलन पादप जे आहीं ।
यहि अशोक बन माहिं सबनि से यहि फल चाहीं ।। ८ ।।
मम प्रीतमहिं मिलाय प्रवल विरहाग्नि अपारा ।
कीजै अतिसय शान्त परम उपकार तुम्हारा ।। ९ ।।
मनिहैं हम सर्वदा यही अभिलाष हमारी ।
इमि अनेक फल सुमन लतन बूझैं सुकुमारी ।।१०।।
कहैं लतन सों वयन तुम्हारे सुमन सु माला ।
पहिरि होत अति मुदित प्राण धन रूप रसाला ।।११।।
याते तुम ने अवसि लखे होंगे मम प्यारे ।
दीजै बेगि दिखाय दृगन भरि नृपति दुलारे ।।१२।।
यहि विधि बृच्छ सु लतन बूझि पुनि चेतन जीवन ।
बूझन लगीं सनेह सहित अतिसय विह्वल मन ।।१३।।
मृगा-मृगी को देखि दुखित बूझैं अकुलाई ।
अखिल लोक पति सुवन भुवन भूषण रघुराई ।।१४।।

तुमने देखे होहिं वेगि तो हमनि दिखाओ ।
पिय सों शीघ्र मिलाय परम विरहाग्नि मिटाओ ।।१५।।
लखि तुम्हरे सुठि नयन प्रिया के दृगन सुरति करि ।
देखा होगा तुमहिं प्राण वल्लभ सनेह भरि ।।१६।।
कृष्ण सार मृग वृन्द लखो हम सबनि भाव से ।
पिय की जानि अनन्य करो पावन सु चाव से ।१७।।
पुनः विपुल नायिकन निरखि भगि चलीं मृगी गन ।
अतिसय हो भयभीत निकट नहिं जाहिं भीरु मन ।।१८।।
तब बोलहिं वर बचन विपुल बिधु बदनी बाला ।
विरहानल सन्तप्त तदपि मन हरन रसाला ।।१९।।
हे सुठि मृगी समाज हमहिं लखि जनि सकुचाओ ।
नहिं होवो भय भीत पिया से हमनि मिलाओ ।।२०।।
उन विन परम उदास रहैं हम सब नव नारी ।
पिय के दर्शन पाय होइहैं परम सुखारी ।।२१।।
जो तुम देहु मिलाय पिया सों मोहिं कृपा करि ।
मनिहैं अति प्रिय तुमहिं सतत हिय में उमंग भरि ।।२२।।
हे शार्दूलि मनोज मान मद मर्दन मन हर ।
चक्रवर्ति अवधेश सुवन तुम लखे दृगन भर ।।२३।।
उन से देहु मिलाय पियहिं जब दृग लखि पैइहों ।
तुम को भगिनी सरिस हृदय से नेह बढ़ैइहों ।।२४।।
शम्भु प्रिया जग जननि केर अतिसय प्रिय बनिहो ।
पैइहो अति ही सुयश बात मेरी जो मनिहो ।।२५।।

इमि खोजत पिय काहिं सघन बन कुन्ज मझारी।
सोवत एक शार्दूल शीश धरि चरण बिचारी ॥२६॥
बहु बिधु बदनी बाल बिकल गमनी मन माहीं।
गैंडा देखत एक सकल मन माहिं डराहीं ॥२७॥
कमल सु फूलन मारि उच्चस्वर बोलन लागीं।
अखिल नायिका बृन्द प्राण धन पद अनुरागीं ॥२८॥
पुनि सब आगे बढ़ीं लखा एक सुअर विशाला।
खोदत महि से कन्द उग्र अति दन्त कराला ॥२९॥
बोलीं तेहि से बचन सकल ललना समुदाई।
छिति पालक नृप तनय लखे तुमने रघुराई ॥३०॥
मग जीवन धन प्राण रसिक शिर मौर मोद कर।
निश्चय तुम ने लखे होहिं यदि परम सु छबि धर ॥३१॥
तो मोहिं देहु बताय मोद अति तव मन माहीं।
लखि मेरो अनुमान हेतु दूसर कछु नाहीं ॥३२॥
पिय छबि देखे बिना हर्ष होतो नहिं इतनो।
हम सब हिय अनुमानि लखा तुम्हरे मन जितनो ॥३३॥
पुनि पिय प्रेम पियूष पगीं प्रमदा समुदाई।
गमनी गति अति मन्द दुखित अपनपौ भुलाई ॥३४॥
लपटे लतत निहार भुजग सब बनि विमुग्ध अति।
पकड़हिं भरि अनुराग जानि पिय केश विमल मति ॥३५॥
निज मन बुधि चित प्राण सकल अर्पें पिय काहीं।
याते पिय को रूप छटा देखत सब माहीं ॥३६॥

रघुवर वामा बृन्द स्वामिनी आपन मानी ।
काटत नहिं अहि निकर नमत शिर सों हित जानी ॥३७॥
रघुनन्दन प्रिय बधुन केर कर कंज मधुर तर ।
कोमलता की सीवं सुखद स्पर्श पाय कर ॥३८॥
अहि गन के सब ताप मिटे अति ही सुख पायो ।
याते चरणन माहिं मुदित मन शीश झुकायो ॥३९॥
पुनि देखेउ गज एक महामद मत्त विशाला ।
वासे बोलीं बचन विपुल गज गमनी वाला ॥४०॥
हे गजराज उदार लखे तुम ने मम प्यारे ।
मत्त गजेन्द्र सदृश्य गमन कारी सुकुमारे ॥४१॥
हीरा मणि वर मुक्त माल उर स्थल धारे ।
जीवन प्राण हमार अवधनृप दृगन सितारे ॥४२॥
पूजित उनके चरण कमल तव पृष्ट सुहावन ।
शिव अज वन्दित सतत मुनिन मन मोद बढ़ावन ॥४३॥
विहरत यहि बन माहिं सदा तुम अति सुख पाई ।
याते अवसहिं लखे होहिं गे तुम रघुराई ॥४४॥
दीजै हमनि बताय दया ऐसी अब कीजै ।
पिय सों मोहिं मिलाय जगत में अति यश लीजै ॥४५॥
बहुँरि हंस गन निरखि मधुर प्रिय बचन उचारे ।
परम हंस चितचोर लखे तुम नृपति दुलारे ॥४६॥
चक्रवर्ति अवधेश जलधि से प्रगट चन्द्र नर ।
राजीव लोचन राम श्याम सुन्दर सुशील तर ॥४७॥

क्षमा दया रस सिन्धु मोर दुर्दैव मेघ सम ।
आच्छादित तेहि किये सुभग नर चन्द्र मधुर तम ॥४८॥
पिय ने कियो बिचार हंम ज्ञानी निर्मल अति ।
तेहिं न मोहिं पहिचान छिपे यासे उदार मति ॥४९॥
तुम सब कहो बिचारि छिपे कहँ रसिक रँगीले ।
जीवन प्राण हमार प्रेम लम्पट रिझबीले ॥५०॥
दीजै हमनि दिखाय दया ऐसी अब कीजै ।
हम सब को दुख मेटि जगत में अति यश लीजै ॥५१॥
बहुरि नटत लखि मोर कहहिं सब अति प्रिय बानी ।
तुम देखे मम कान्त अवसि निश्चय हम जानी ॥५२॥
याते अति आनन्द भरे तुम नटत मगन मन ।
दीजै हगन दिखाय कहाँ मम प्राण जिवन धन ॥५३॥
जो सुठि सुधा समान सरस शुचि मेघ सरिस स्वर ।
नील कमल सम कान्ति केलि कल कुशल मधुर तर ॥५४॥
भूमि सु भाग्य स्वरूप अमल अनुपम मन भावन ।
विपुल विभव बहु लाभ प्रगट कीने जग पावन ॥५५॥
पुनि खंजन को देखि कहैं सब हिय अकुलाई ।
क्या हमको करि कृपा सकत पिय ढिग पहुँचाई ॥५६॥
तुम चंचलता सीवं हमनि नयनानन्द देहू ।
सफल करहु निज जन्म जगत में अतियश लेहू ॥५७॥
जन्म सिद्ध तुम चपल पिया से हमनि मिलइहो ।
तुम्हरो दर्शन लाभ प्रदायक यह यश पइहो ॥५८॥

तुमहिं मिले अति लाभ सत्य जग में सब जनि हैं।
होगा तव कल्याण महाँ हम सब गुन मनि हैं ॥५९॥
इमि निज सखियन सहित विकल मिथिलेश कुमारी।
खोजि थकीं सब विपिन पूछि सब जन्तुन हारी ॥६०॥
पर पिय परम प्रवीण मिले नहिं तब सकुचाई।
बैठीं सब एकत्र व्यथित अति शोक समाई ॥६१॥
अब क्या चाहिय करन सकल मिलि करैं बिचारा।
कहाँ मिलैं हृदयेश प्राण धन नृपति कुमारा ॥६२॥
विटप अशोक सु मूल मणिन वेदिका सुहाई।
बैठीं श्रीमैथिली संग सब सखि समुदाई ॥६३॥
प्रीतम विषम वियोग अंग सब सिथिल भये अति।
हृदय रमण की प्राप्ति प्रबल इच्छा उदार मति ॥६४॥
बोलीं श्री मैथिली सखिन सों बचन मधुर तर।
सुनिये सब सहचरी वृन्द मोहिं सुखद नेह घर ॥६५॥
जहँ लगि गति जेहि केर तहाँ तक सब पिय काहीं।
खोजहिं करि पुरुषार्थ मिलहिं पिय संसय नाहीं ॥६६॥
निज सु बुद्धि अरु शक्ति पाय कीजै उपाय वर।
शास्त्रकार मुनि वृन्द कहहिं सिद्धान्त मोद कर ॥६७॥
सर्वार्थ दातार क्रिया ही संत बतावैं।
क्रिये सु कर्म अवश्य मेव अभीष्ट वर पावैं ॥६८॥
तुम सब सौम्य स्वभाव पिया की परम पियारी।
सज्जन को शुभ कर्म अवसि होवत सुखकारी ॥६९॥

हम सब के आनन्द कन्द रघुनन्द रसिक वर।
उन बिन "सीताशरण" व्यर्थ जीवन मम क्षण भर ॥७०॥
इमि सिय स्वामिनि केर सकल सखि आयसु पाई।
सुर किन्नर गन्धर्व यक्ष कन्या समुदाई ॥७१॥
पन्नग विद्याधरी सिद्ध अरु गुह्य कुमारी।
नागसुता अज्ञात अपर चारण सुकुमारी ॥७२॥
जल थल नभ अरु मध्य दिशा विदिशा सब धाईं।
जिनकी गति सर्वत्र अपर कोइ रोकि न पाईं ॥७३॥
निज इच्छामय रूप अनेकन भाँति बनाई।
खोजैं बनि अज्ञात सकल रस निधि रघुराई ॥७४॥
स्वामिनि आयसु पाय सकल सखि पिय खोजन हित।
जहँ तहँ गईं सिधारि तबहिं मैथिली शान्त चित ॥७५॥
निज दोउ दृग करि वन्द ध्यान में पिय की मूरति।
देखन हित करि यत्न लगीं ध्यावन सुठि सूरति ॥७६॥
लगी समाधि अखण्ड ध्यान में पिय न लखाये।
तब तजि परम समाधि खोलि दृग रुदन मचाये। ७७॥
पुनि हिय कीन बिचार मोर मन बुधि चित सारे।
हरण किये हृदयेश प्राण जीवन धन प्यारे ॥७८॥
सो पिय गये छिपाय शून्य मम हृदय बिचारा।
क्या करि सकै समाधि तजी अकुलाय अपारा ॥७९॥
पासहिं सरयू सुतट निकट कछु सन्त बिराजे।
परम तपस्वी रूप शान्त चित निज सुख साजे ॥८०॥

निज सु कान्त की प्राप्ति यत्न उनसे जब बूझा ।
प्रेम शून्य हिय तासु उनहिं नाहिन कछु सूझा ॥८१॥
बोले नहिं कुछ बयन हृदय में करैं बिचारा ।
जग में स्वजन समाज प्रबल सम्बन्ध अपारा ॥८२॥
करत परस्पर प्रेम मोह अज्ञान समाने ।
हम ज्ञानी जन काहिं प्रयोजन का हम जाने ॥८३॥
अस अपने मन सोंचि तपस्वी मौनहिं साधी ।
बैठे दृग करि बन्द मनहुँ लगि गई समाधी ॥८४॥
तब सोचा मैथिली यदपि यह लगत द्विजाती ।
हैं तथापि अज्ञात तत्व अनपढ़ सब भाँती ॥८५॥
पुनि गुनि निज अपमान श्राप उनको दै दीना ।
बैठे होकर मौन निरादर मम अति कीना ॥८६॥
याते दिव्य सु जन्म कर्म मम तुम नहिं जनिहो ।
केवल ग्रसित विमोह सिद्ध अपने को मनिहो ॥८७॥
करि औरहिं उद्वेग सदा तुम आनँद पइहो ।
येही सुयश महान जगत में तुम सब लइहो ॥८८॥
पर उन सबने हृदय माहिं समझा यहि भाँती ।
ये कोइ कामाशक्त चित्त नारी मदमाती ॥८९॥
मुग्धा स्नेह विभोर स्वपति हित परम दुखारी ।
रोवति करति विलाप विकल होवति अतिभारी ॥९०॥
यहि भ्रम वश वे रहे श्राप के अन्त मझारी ।
नहिं विनती कछु कीन दयउ चित में नहिं धारी ॥९१॥

क्योंकि महा मोहनी प्रवल माया मद माते ।
वे सब लागे हँसन मन्द कछु कहि इठलाते ॥९२॥
इतने में सब सखी जिनहिं सिय आयसु दीनी ।
आईं अति श्रम भरीं पिया प्रेमामृत भीनी ॥९३॥
खोजीं करि अति यत्न मिले नहिं हृदय रमण वर ।
बिरह व्यथा वलवान बहत दृग अश्रु अधिक तर ॥९४॥
अति करुणा रस मगन सकल पुरुषार्थ भुलाई ।
लौटीं श्री मैथिली चरण पंकज ढिग आई ॥९५॥
गहे सनेह समेत खिन्न हिय बोलि न पावैं ।
हा प्राणेश उदार रमण कहि कहि विलखावैं ॥९६॥
लखि सबको अति दुखित सीय मन धीरज धारेउ ।
कहि सनेह मय बचन मधुर प्रिय सबहिं दुलारेउ ॥९७॥
यद्यपि परम स्वतन्त्र मैथिली अवनि कुमारी ।
गावन लागीं तदपि पिया गुण रूप अपारी ॥९८॥
पिय की जीवन मूरि सदा प्राणन ते प्यारी ।
श्री मिथिलाधिप लली प्रेम रस रूप उजारी ॥९९॥
बोलीं हे हृदयेश प्राण वल्लभ सब लायक ।
(सीताशरण) अधार प्रेम लम्पट प्रिय नायक ॥१००॥

दो०-हे जीवन धन साँवरे, मन क्रम बचन तुम्हार ।
किये न कछु अपराध मैं, हे रसिकेश उदार ॥४॥

मम मन की सब बात आप जानत हे प्यारे ।
निवसत मम हिय माहिं सदा तुम प्राण अधारे ॥ १ ॥

तव प्रेमामृत सिन्धु जासु हिय में लहरावै।
तासु चित्त में दोष कहहु कैसे रहि जावै ॥ २ ॥
नीके जानत आप मोर मन तव अनुरागा।
सन्तत सब विधि नाथ रहत तुम्हरेहि रस पागा ॥ ३ ॥
हे नर देव कुलाम्बुजं अति सुखद भानु सम।
श्री रघुवीर उदार रूप गुण शील मधुर तम ॥ ४ ॥
चक्रवर्ति नर देव भानु कुल कमल सुहावन।
दिनकर जिमि श्रीराम सुखद रस निधि मनभावन ॥ ५ ॥
मम मन प्रणय सु पात्र प्रेम आतुरता नाहीं।
जानत भली प्रकार आप अपने मन माहीं ॥ ६ ॥
जासों जीवन प्राण गाढ़ सम्बन्ध जुड़ावत।
वाके चित के सकल छिद्र छल दोष नशावत ॥ ७ ॥
हमने अपनो रूप आपको अर्पण कीना।
जिमि ऋषिगण सुठि सुधा हव्य अगिनिहिं दै दीना ॥ ८ ॥
हमने निज अपनपौ आप को दीनो प्यारे।
वैसे ही हृदयेश भये सब भाँति हमारे ॥ ९ ॥
गज मुक्ता इव बचन मोर तव गुण सु सूत्र सम।
विरचित माला ललित परम मन हर अति अनुपम ॥ १० ॥
तुमहिं समर्पित करौं करिय स्वीकृत सुजान वर।
पूरक पावन प्रेम प्रीति पालक उदार तर ॥ ११ ॥
हे प्रिय परम प्रवीण विभो हे हृदय रमण वर।
नहिं जानौ गुण दोष केर लक्षण हे सुख कर ॥ १२ ॥

यदि हम में भ्रम होय आपने देखा प्यारे ।
तो कीजिय तेहि दूर प्रगट हो राज दुलारे ॥१३॥
जेहि मन दिशि भ्रम होत मिटै नहिं किसी प्रकारा ।
जब तक वह भरि नयन दिवाकर को न निहारा ॥१४॥
उदय होत लखि भानु स्वयं भ्रम जात हिराई ।
याते हे रसिकेश प्राण वल्लभ सुखदाई ॥१५॥
हम सब नारी बृन्द नवल कल कमल समाना ।
तुम बिन विकल विशेष भानु सम सुखद सुजाना ॥१६॥
उदय होउ हृदयेश मोर भ्रम पुंज दूरि करि ।
पाइय परमानन्द परम उत्साह प्यार भरि ॥१७॥
अमित नवल नागरी प्रेम लम्पट नायक वर ।
करत विनोद विहार रमण रति रस उज्वल तर ॥१८॥
यदि कोइ वर नायिका आपसे कहा होय पिय ।
सखियन संग बिहार निरखि तव प्यारी निज हिय ॥१९॥
दोष रहीं ठहराय आप में हे रसिकेश्वर ।
यदि यह भ्रम हो नाथ आप में हे हृदयेश्वर ॥२०॥
मैं यह निज अपराध मानती हूँ हे प्यारे ।
येहि में अस समझिये राज नन्दन मन हारे ॥२१॥
यह मेरी ही प्रिया दया इन पर सब काला ।
मो कहँ चाहिय करन अहैं यह नवल सु वाला ॥२२॥
अस बिचारि रसिकेश दया सागर उदार हिय ।
छमा करिय प्राणेश रास रसिया सुजान जिय ॥२३॥

रजो तमो गुण हेतु संग जो रहत सदा ही।
तिरस्कार हो जात परस्पर भूलि कदा ही ॥२४॥
कारण यह हृदयेश त्रिगुण मय जगत विधाता।
बिरचित कीन विशेष भाँति अद्भुत सुखदाता ॥२५॥
निर्गुण नहिं कोइ वस्तु त्रिगुण मय विश्व लगावत।
योगि कुलावधिनाथ आप बिन अति दुख पावत ॥२६॥
हम सब वामा बृन्द रमण मम जीवन धन पिय।
उर की जानन हार सहज में हे उदार हिय ॥२७॥
मम मन की सब बात भली बिधि जानत प्यारे।
देखिय स्वयं बिचारि आप ही कृपा अगारे ॥२८॥
पुनि हे प्रभु परमीश परम गति अलख अगोचर।
अविगत अमल अनूप रूप निधि परम मनोहर ॥२९॥
जग में जेते मनुज सबनि ते आप भिन्न अति।
त्रिगुणातीत सु दिव्य अमृतमय रूप विमल मति ॥३०॥
सब जगमें विख्यात अस्तु हे प्राण अधारे।
तिरस्कार नहिं होय कदा तुम्हरो हे प्यारे ॥३१॥
जन्म कर्म भवदीय दिव्य अनुपम निन्दाहत।
विद्वत बृन्द मझार प्रतिष्ठित सतत बुद्धि गत ॥३२॥
अन्तर्द्धानहुँ भये आप के याही से पिय।
निर्भय मैं सब भाँति अहौं निश्चय मेरे हिय ॥३३॥
निर्मल विशद सु बोध रावरो हे जीवन धन।
जानत हो सब बात अहै जो कछु मेरे मन ॥३४॥

तो फिर कवन प्रकार मोहिं त्यागन करि पइहैं।
बीते कछु ही समय आय पुनि गर लपटइहैं ॥३५॥
बर्धन प्रेम प्रकर्ष हर्ष यह लीला ठानी।
परखन हित प्रिय प्रीति आप पिय सारंग पानी ॥३६॥
देखत भये अदृश्य सबनि के रूप रँगीले।
गर्वीले गुण सिन्धु प्रेम पालक रिझबीले ॥३७॥
जलद घटा जिमि सुखद श्याम सुन्दर अतिमनहर।
सब बिधि पूरण काम स्वजन पालक सुशील वर ॥३८॥
प्रीतम तुम्हरेहिं सदृश जन्म मेरो अति पावन।
आदरणीय अपार आप को हे मन भावन ॥३९॥
जैसे आदरणीय मोहिं सन्तत सु जन्म तव।
रघुकुल भूषण नाथ होय हिय अति प्रसन्न सब ॥४०॥
दीजिय दर्शन बेगि आप बिन हे सुख सागर।
लगत विश्व दुख रूप हमहिं हे छवि गुण आगर ॥४१॥
कहँ लगि कहौं बनाय आपबिन किंचित हू सुख।
मैं नहिं अनुभव करौं देत सव साज महाँ दुख ॥४२॥
ऐसे ही हिय रमण मोहिं बिन तुम को प्यारे।
कहँ मिलिहै सुख स्वाद राजनन्दन मन हारे ॥४३॥
हम दोउ को सम्बन्ध अमल निरुपाधि अनूपम्।
निश्चय दृढ़ सर्वदा नित्य बिधि बश सुख रूपम् ॥४४॥
काहू बिधि केहु काल सर्वथा कबहूँ प्यारे।
तुम मोहिं से नहिं प्रथक होसकत प्राण अधारे ॥४५॥

तैसेहिं जीवन प्रान आप से प्रथक कदा हम ।
हो न सकैं केहु भाँति यदपि जानत यह हू तुम ॥४६॥
तदपि करन हित प्रीति पुष्ट यह नटवर लीला ।
कीनी रसिक नरेश प्राण वल्लभ सुख सीला ॥४७॥
यह अपूर्व सुख रमण एक रस हम दोउन कर ।
दर्शत भिन्न अभिन्न सतत सब भाँति मधुर तर ॥४८॥
आत्मबोध आनन्द प्रथक नहिं होत कदा ही ।
तिमि हम दोउ को संग एक रस रहत सदा ही ॥४९॥
सतत नित्यसंयोग दोउन को बिषम बियोगा ।
होवत नहिं केहु काल सतावत नहिं भव रोगा ॥५०॥
परम कृपालु उदार आप हे प्रणत पालपिय ।
काह कहौं समुझाय आप को हे सुजान जिय ॥५१॥
हे हिय मन्दिर दीप हरन अज्ञान अँधेरा ।
दायक प्रीति प्रतीति करन विज्ञान उजेरा ॥५२॥
जे जन अति निर्दोष नयन गोचर तिन केरे ।
होत कृपा निधि आप देत सुख स्वाद घनेरे ॥५३॥
जगत प्रकाशक आप भानु कुल भानु ज्ञान घन ।
अखिल विश्व कल्याण परम करता उदार मन ॥५४॥
यासे यह नहिं उचित तुमहिं काहू बिधि प्रीतम ।
जो यह तुम ने कीन प्रगट बल महाँ अन्ध तम ॥५५॥
तुम्हरो बिषम वियोग हमनि को प्रलय समाना ।
जानत भली प्रकार स्वयं रसिकेश सुजाना ॥५६॥

जो पै प्राण अधार प्रगट हो दर्शन दैइहो।
नतरु परम रिझवार हमनिं को जियत न पइहो ॥५६॥
निकर नायिका बृन्द परम प्रेयसी तिहारी।
निश्चय बनिहैं मृतक जानिये रासबिहारी ॥५७॥
तव क्या होगा लाभ आपको हे उदार पिय।
कीजिय आप विचार रसिक वल्लभ अपने हिय ॥५८॥
आत्म ज्ञान के उदय यथा पंडित सुख पावैं।
प्राप्त किये ऐश्वर्य्य तपस्वी मोद मनावैं ॥५९॥
मृग नयनी बिधु बदनि वाम जिमि निज पति पाये।
तिमिर निबासी मनुज उदय रबि लखि हर्षाये ॥६०॥
तद्वत हे चितचोर मनोभव मोहन प्यारे।
दै निज दर्शन बेगि करिय हम सबनि सुखारे ॥६१॥
यहि विधि नरवर सुता मैथिली अवनि कुमारी।
पिय के बिषम वियोग व्यथित पावत दुख भारी ॥६२॥
पल पल कल्प समान गाय पिय गुणन बितावें।
चहुँदिशि सखी समाज सबनि अति धीर बँधावें ॥६३॥
बोलीं सब सहचरी प्रियासों दोउ कर जोरी।
हे मम जीवन मूरि कृपामयि राजकिशोरी ॥६४॥
हम सब के मन रमण प्राण जीवन धन प्यारे।
देखत भये अदृश्य दृगन ते राज दुलारे ॥६५॥
कवन भाँति अब मिलैं बहुरि पिय रूप रसिक बर।
करैं कौन कर्त्तव्य देहु आयसु मोहिं सुख कर ॥६६॥

जयति राम रघुवंश हंस अवतंश सिया वर ।
जय जय रसिक नरेश रास रसिया उदार तर ॥६७॥
जयति मैथिली मधुर मंजु मन मोहन मन हर ।
जय जय जीवन मूरि कृपा गुण सिन्धु सुखद वर ॥६८॥
जयति अशोक सु विपिन रमण कारी रस सागर ।
जय जय जीवन प्राण प्रेम पालक नव नागर ॥६९॥
जयति स्वामिनी सीय सतत आश्रित सुखदानी ।
जय जय "सीताशरण" राजनन्दन पटरानी ॥७०॥

दो०–जयति जयति हृदयेश मम, जय जय परम उदार ।
जय जय "सीताशरण" पिय, जीवन प्राण अधार ॥१॥
जयति किशोरी लाड़िली, जय जय जीवन मूरि ।
जय जय 'सीताशरण' नित, दीजिय निज पग धूरि॥२॥

इति श्रीं युगल माधुरी बिलाशे, बिबाहोत्तर देंव कन्या रस रासे सीताशरण सुमति प्रकाशे नवमोऽध्याय: सम्पूर्णम् ।

❋ दशमोऽध्यायः ❋

श्रीरामा राधन प्रकरणम्

छन्दरोला–

इमि निज सखियन केर प्रश्न सुनि राज किशोरी ।
वर बिचार चातुर्य सु निधि अति प्रेम बिभोरी ॥ १ ॥
परम शील विज्ञान रूप रस गुण कीं खानी ।
प्रीतम प्रेम विभोर यदपि चिन्तित दुख सानी ॥ २ ॥